

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 21: रन्तिदेव

3 October 2026



अड़तालीस दिन बिना अन्न-जल के प्यास से मरणासन्न होकर भी, राजा रन्तिदेव अपना अन्तिम जल एक भूखे चाण्डाल को दे देते हैं — राजाओं के समस्त इतिहास में करुणा का परम कर्म।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह इक्कीसवाँ अध्याय भरत के वंश को आगे बढ़ाता है और, अपने हृदय में, राजा रन्तिदेव की अमर कथा देता है — एक ऐसा राजा जिसकी करुणा इस लोक एवं परलोक दोनों में गाई जाती है। शुकदेव राजा परीक्षित को बताते हैं कि किस प्रकार रन्तिदेव, जो केवल बिना माँगे मिले पर जीते थे और भूखे रहते हुए भी अपना सब कुछ दे देते थे, अड़तालीस दिन बिना जल के भी बिताते हैं; और किस प्रकार, जब अन्ततः अन्न एवं जल आते हैं, वे उसे टुकड़ा-टुकड़ा करके बाँट देते हैं — पहले एक भूखे ब्राह्मण को, फिर एक शूद्र को, फिर कुत्तों सहित एक व्यक्ति को — और अन्त में, स्वयं का शरीर टूटते हुए भी, अपना अन्तिम प्याला एक प्यासे अजनबी को सौंप देते हैं, केवल यही चाहते हुए कि समस्त प्राणियों की पीड़ा का भार वे स्वयं उठा लें। तीनों लोकों के स्वामी, जो उनकी परीक्षा हेतु वेश बदलकर आए थे, प्रकट हो जाते हैं, और रन्तिदेव, कुछ न माँगते हुए, केवल भगवान् पर अपना मन स्थिर करते हैं। तत्पश्चात् अध्याय भरत के वंश को अनेक राजाओं के माध्यम से आगे ले जाता है। यह अध्याय परम पूजा के रूप में करुणा, और प्रत्येक प्राणी में भगवान् को देखने वाली आत्मा के विषय में है।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 21 (एकविंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भरत का वंश
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: चन्द्रवंश में भरत का वंश; राजा रन्तिदेव का राज्य
- केन्द्रीय विषय: भरत के वंशज, और सर्वोपरि राजा रन्तिदेव की परम करुणा एवं भक्ति
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 1-36
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

रन्तिदेव तक का वंश

शुकदेव ने कथा आगे बढ़ाई। वितथ (भरद्वाज) से मन्यु हुए, और उनसे बृहत्क्षत्र, जय, महावीर्य, नर एवं गर्ग; नर के पुत्र संकृति थे, जिनके पुत्र गुरु एवं रन्तिदेव थे — और रन्तिदेव की महिमा, शुकदेव ने कहा, इस लोक एवं परलोक दोनों में गाई जाती है।

गुरुश्च रन्तिदेवश्च सङ्कृतेः पाण्डुनन्दन ।
रन्तिदेवस्य महिमा इहामुत्र च गीयते ॥ २ ॥

guruś ca rantidevaś ca saṅkṛteḥ pāṇḍu-nandana rantidevasya mahimā ihāmutra ca gīyate

अर्थ: गुरु एवं रन्तिदेव संकृति के पुत्र थे, हे पाण्डुनन्दन; और रन्तिदेव की महिमा इस लोक एवं परलोक दोनों में गाई जाती है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 2)

रन्तिदेव की महान् परीक्षा

रन्तिदेव केवल उसी पर जीते थे जो बिना प्रयास मिलता, और स्वयं भूखे रहते हुए भी जो कुछ पाते सब दे देते थे; अतः वे एवं उनका परिवार महान् कष्ट में पड़ गए, और, भूख एवं प्यास से काँपते हुए भी शान्त रहकर, उन्होंने अड़तालीस दिन बिना जल के भी बिताए। उनतालीसवें दिन के प्रातःकाल, घृत, दूध एवं शर्करा में पका चावल, गेहूँ की खीर एवं जल उनके पास आए; किन्तु ज्योंही वे खाने को हुए, एक ब्राह्मण अतिथि आ पहुँचा। सबमें भगवान् को देखते हुए, रन्तिदेव ने श्रद्धापूर्वक उसे एक भाग दिया, और ब्राह्मण खाकर चला गया।

तस्मै संव्यभजत् सोऽन्नमादृत्य श्रद्धयान्वितः ।

हरिं सर्वत्र संपश्यन् स भुक्त्वा प्रययौ द्विजः ॥ ६ ॥

tasmai samvryabhajat so 'nnam āḍṛtya śraddhayānvitaḥ harim sarvatra sampaśyan sa bhuktvā prayayau dvijaḥ

अर्थ: सर्वत्र श्री हरि को देखते हुए, रन्तिदेव ने श्रद्धापूर्वक एवं आदर से ब्राह्मण को अन्न का एक भाग दिया; और ब्राह्मण, खाकर, चला गया।
(नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 6)



अड़तालीस दिन बिना अन्न-जल के, राजा रन्तिदेव को अन्ततः थोड़ा अन्न मिलता है — और, प्रत्येक अतिथि में भगवान् को देखते हुए, वे स्वयं खाने से पूर्व ही एक आते ब्राह्मण को एक भाग दे देते हैं (श्लोक 3-6)।

सबको देना

ज्योंही रन्तिदेव एवं उनका परिवार शेष अन्न बाँटते हैं, एक शूद्र आ पहुँचता है, और वे उसे भी एक भाग देते हैं। फिर कुत्तों सहित एक मनुष्य आता है, जो अपने एवं अपने कुत्तों के लिए अन्न माँगता है; रन्तिदेव श्रद्धापूर्वक जो कुछ शेष था वह सब कुत्तों एवं उनके स्वामी को दे देते हैं, उन्हें भगवान् की अभिव्यक्ति मानकर प्रणाम करते हुए। अब केवल थोड़ा जल शेष था, एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त; और ज्योंही वे उसे पीने को हुए, एक चाण्डाल प्रकट होता है, करुण स्वर में जल की भीख माँगता हुआ।



भगवान् का स्मरण करते हुए, रन्तिदेव अपना अन्तिम अन्न एक अजनबी एवं उसके कुत्तों को दे देते हैं, उन्हें भगवान् की अभिव्यक्ति मानकर प्रणाम करते हुए — अपने भूखे परिवार के लिए कुछ न रखते हुए (श्लोक 7-9)।

रन्तिदेव की प्रार्थना

चाण्डाल की करुण प्रार्थना सुनकर, करुणा से भरे राजा ने अमृत-सदृश वचन कहे। उन्होंने भगवान् से चाहा, उन्होंने कहा, न समस्त योग-शक्तियों सहित परम पद, न पुनर्जन्म से मुक्ति; बल्कि, समस्त दुःखी प्राणियों के हृदय में वास करते हुए, वे उनका दुःख अपने ऊपर लेना चाहते थे, ताकि वे दुःख से मुक्त हों।

न कामयेऽहं गतिमीश्वरात् परा-
मष्टर्द्धियुक्तामपुनर्भवं वा ।
आर्तिं प्रपद्येऽखिलदेहभाजा-
मन्तःस्थितो येन भवन्त्यदुःखाः ॥ १२ ॥

*na kāmaye 'ham gatiṁ īśvarāt parām aṣṭarddhi-yuktām apunar-bhavaṁ vā ārtiṁ prapadye
'khila-deha-bhājām antaḥ-sthito yena bhavanty aduḥkhāḥ*

अर्थ: मैं भगवान् से न अष्ट-सिद्धियों सहित परम पद माँगता हूँ, न पुनर्जन्म से मुक्ति; समस्त देहधारियों के भीतर वास करते हुए, मैं उनका दुःख अपने ऊपर लेना चाहता हूँ, ताकि वे दुःख से मुक्त हों। (नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 12)

यह समर्पण के शब्द कहकर, वह राजा — जिनका शरीर स्वयं क्षीण हो रहा था — ने जल अपने ही सूखे अधरों तक न ले जाकर चाण्डाल के हाथों में रख दिया।

इति प्रभाष्य पानीयं म्रियमाणः पिपासया ।

पुल्कसायाददाद्धीरो निसर्गकरुणो नृपः ॥ १४ ॥

iti prabhāṣya pānīyaṁ mriyamāṇaḥ pīpāsayā pulkasāyādadād dhīro nisarga-karuṇo nṛpaḥ

अर्थ: ऐसा कहकर, धैर्यवान् राजा ने, अपने स्वभाव से ही करुण, वह जल चाण्डाल को दे दिया, यद्यपि वे स्वयं प्यास से मर रहे थे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 14)

भगवान् का प्रकट होना

तीनों लोकों के स्वामी — ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव — जो ब्राह्मण, शूद्र, कुत्तों वाले मनुष्य एवं चाण्डाल के छद्म रूपों में उनके धैर्य की परीक्षा हेतु आए थे, अब उनके समक्ष प्रकट हो गए। किन्तु रन्तिदेव, समस्त आसक्ति एवं लालसा से मुक्त, केवल उनका अभिवादन करके भक्ति से भगवान् वासुदेव पर अपना मन स्थिर कर बैठे, कुछ न माँगते हुए। और उनके लिए, जिन्होंने स्वयं भगवान् के अतिरिक्त कोई वर न चाहा, माया का सम्पूर्ण जाल एक स्वप्न के समान विलीन हो गया।

ईश्वरालम्बनं चित्तं कुर्वतोऽनन्यराधसः ।

माया गुणमयी राजन्स्वप्नवत् प्रत्यलीयत ॥ १७ ॥

īśvarāmbanaṁ cittaṁ kurvato 'nanya-rādhasaḥ māyā guṇamayī rājan svapnavat pratyalīyata

अर्थ: रन्तिदेव के लिए, जिन्होंने अपना मन पूर्णतः भगवान् पर स्थिर किया एवं कुछ अन्य न चाहा, तीन गुणों की माया एक स्वप्न के समान विलीन हो गई, हे राजन्। (नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 17)

उनकी घनिष्ठ संगति से, जो सब रन्तिदेव के पदचिह्नों पर चले वे केवल भगवान् नारायण को समर्पित योगी बन गए।



तीनों लोकों के स्वामी — ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव — जो उनकी परीक्षा हेतु वेश बदलकर आए थे, रन्तिदेव के समक्ष प्रकट होते हैं; किन्तु वे कुछ नहीं माँगते, अपना मन पूर्णतः भगवान् वासुदेव पर स्थिर करते हुए (श्लोक 15-17)।

भरत का वंश आगे बढ़ता है

तत्पश्चात् शुकदेव ने वंश आगे बढ़ाया — एक पीढ़ी से दूसरी तक, कहीं क्षत्रिय-रक्त से ब्राह्मण-तेज प्रकट होता है तो कहीं एक राजा की सन्तान एक सम्पूर्ण नगरी की नींव बन जाती है, यहाँ तक कि बृहत्क्षत्र के पुत्र हस्ती के नाम पर हस्तिनापुर नगरी बस गई।

गर्गाच्छिनिस्ततो गार्ग्यः क्षत्राद् ब्रह्म ह्यवर्तत ।

दुरितक्षयो महावीर्यात् तस्य त्रय्यारुणिः कविः ॥ १९ ॥

पुष्करारुणिरित्यत्र ये ब्राह्मणगतिं गताः ।

बृहत्क्षत्रस्य पुत्रोऽभूद्धस्ती यद्धस्तिनापुरम् ॥ २० ॥

gargāc chinis tato gārgyaḥ kṣatrād brahma hy avartata duritakṣayo mahāvīryāt tasya trayyāruṇiḥ kavīḥ puṣkarāruṇir ity atra ye brāhmaṇa-gatiṁ gatāḥ bṛhatkṣatrasya putro 'bhūd dhastī yad-dhastināpuram

अर्थ: गर्ग से शिनि हुए, और फिर गार्ग्य, जिनसे, योद्धा वंश होते हुए भी, एक ब्राह्मण-वंश उत्पन्न हुआ; महावीर्य से दुरितक्षय हुए, जिनके पुत्र त्रय्यारुणि, कवि एवं पुष्करारुणि ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया; और बृहत्क्षत्र के पुत्र हस्ती थे, जिनके द्वारा हस्तिनापुर नगरी बसाई गई। (नवम स्कन्ध, अध्याय 21, श्लोक 19-20)



भरत का वंश अनेक राजाओं के माध्यम से आगे बहता है — उन्हीं में हस्ती, जो महान् नगरी हस्तिनापुर बसाते हैं, और अजमीढ, जिनके वंशजों से पांचाल एवं अनेक श्रेष्ठ कुल उत्पन्न होते हैं (श्लोक 19-33)।

हस्ती के पुत्रों अजमीढ, द्विमीढ एवं पुरुमीढ, एवं उनके अनेक वंशजों — जिनमें भर्माश्व के पाँच पुत्र, जो पांचाल कहलाए, एवं मुद्गल से मौद्गल्य ब्राह्मणों का वंश सम्मिलित है — के माध्यम से, भरत का वंश अनेक श्रेष्ठ कुलों में विभक्त हुआ।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. करुणा परम पूजा है। रन्तिदेव की महानता विजय या यज्ञ में नहीं बल्कि उस असीम करुणा में है जिससे वे अपना अन्तिम जल तक दे देते हैं। अध्याय समस्त प्राणियों के प्रति दया को सच्ची भक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है (श्लोक 12-14)।
2. प्रत्येक प्राणी में भगवान् को देखें। रन्तिदेव ब्राह्मण, शूद्र, कुत्तों वाले मनुष्य एवं चाण्डाल सबको समान रूप से देते हैं, प्रत्येक में श्री हरि को देखते हुए। किसी भी दुःखी प्राणी की सेवा उस भगवान् की सेवा है जो सबमें वास करते हैं (श्लोक 6-9)।
3. भक्त भगवान् को चाहता है, उनके उपहारों को नहीं। जब तीनों लोकों के स्वामी उन्हें कोई भी वर देते हैं, रन्तिदेव कुछ नहीं माँगते, केवल वासुदेव पर मन स्थिर करते हैं। सच्ची प्रार्थना दाता को चाहती है, दान को नहीं (श्लोक 15-17)।
4. निःस्वार्थता संसार के भ्रम को विलीन कर देती है। जो कुछ भी अपने लिए न चाहे, उसके लिए संसार-बन्धन की सम्पूर्ण गाँठ अपने-आप खुल जाती है। आत्म-विस्मृत प्रेम स्वयं मोक्ष का द्वार है (श्लोक 17)।
5. पवित्र संगति सबको रूपान्तरित करती है। जो सब रन्तिदेव के पदचिह्नों पर चले वे समर्पित योगी बन गए। एक महान् आत्मा की करुणा अपने चारों ओर सबको भगवान् की ओर उठा देती है (श्लोक 18)।

एक भाक्तेपूर्ण चिन्तन

भागवत के नवम स्कन्ध की कथाओं में जितने राजा हैं, उनमें से किसी को रन्तिदेव से अधिक कोमलता से स्मरण नहीं किया जाता, और उनकी प्रार्थना अब तक कही गई सबसे सुन्दर प्रार्थनाओं में से एक है। यहाँ एक मनुष्य है जो अड़तालीस दिन बिना अन्न-जल के रहा है, जो अन्ततः अपने फटे अधरों के बीच जल का एक ही प्याला थामे है — और जो उसे एक मरणासन्न अजनबी को दे देता है, यह कहते हुए कि वह न स्वर्ग चाहता है, न मोक्ष भी, बल्कि केवल प्रत्येक जीवित प्राणी का दुःख वहन करना ताकि वे मुक्त हों। यह करुणा अपने अन्तिम बिन्दु तक ले जाई गई है, प्रेम इतना पूर्ण कि उसने स्वयं को पूर्णतः भुला दिया है। और भागवत का शान्त चमत्कार यह है कि यही आत्म-विस्मृति उन्हें मुक्त करती है: क्योंकि जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता, उसके लिए संसार का सम्पूर्ण भ्रम एक स्वप्न के समान विलीन हो जाता है, और जिस भगवान् की उन्होंने प्रत्येक भिखारी में सेवा की वह उनके समक्ष प्रकट हो जाते हैं। रन्तिदेव हमें सिखाते हैं कि हम भगवान् के निकट उनके उपहारों को पकड़कर नहीं आते — मोक्ष के उपहार को भी नहीं — बल्कि उसे प्रेम करके जो वे प्रेम करते हैं, अर्थात् प्रत्येक दुःखी प्राणी को। उनका उदाहरण महानता की हमारी धारणा को उलट देता है: सचमुच महान् आत्मा वह नहीं जो पृथ्वी को जीतता है बल्कि वह जो सबसे तुच्छ एवं अन्तिम के लिए स्वयं को पूर्णतः रिक्त कर दे। प्रत्येक प्राणी में भगवान् को देखना, और उस प्राणी की सेवा स्वयं से पूर्व करना — यही, अध्याय हमें बताता है, समस्त पूजाओं में सर्वोच्च है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, राजा रन्तिदेव की भावना में, ऐसी करुणा का अभ्यास करें जो दूसरे को स्वयं से पूर्व रखती है। एक ज़रूरतमंद प्राणी खोजें — एक भूखा व्यक्ति, एक संघर्षरत पड़ोसी, यहाँ तक कि एक प्यासा पशु — और अपने आराम को पूरा करने से पूर्व जो दे सकें दें, उनके भीतर भगवान् की उपस्थिति देखते हुए एवं अपना कर्म इस प्रार्थना के साथ अर्पित करते हुए, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” देते समय, पुरस्कार या मान्यता की किसी इच्छा को छोड़ दें, इसके बजाय, रन्तिदेव की भावना में, केवल यह प्रार्थना करें कि दूसरों का दुःख कम हो। आत्म-विस्मृत दया का एक छोटा कर्म आज आपकी पूजा बने, और उस सत्य का स्वाद लें जो रन्तिदेव ने प्रकट किया — कि वह हृदय जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता, और प्रत्येक प्राणी में भगवान् की सेवा करता है, सबसे अधिक उनके निकट है।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का इक्कीसवाँ अध्याय भरत के वंश को आगे ले जाता है और अपने हृदय में राजा रन्तिदेव के अमर उदाहरण को प्रतिष्ठित करता है। भूख-प्यास से टूटते हुए भी वे एक-एक करके अपना सब कुछ औरों को सौंप देते हैं, और अन्त में परीक्षा लेने आए तीनों लोकों के स्वामी के समक्ष कुछ भी न माँगकर केवल भगवान् को ही चाहते हैं — उनकी यह निष्काम भक्ति ही माया के समस्त बन्धन को क्षण भर में तोड़ देती है। तत्पश्चात् अध्याय भरत के वंश की अनेक शाखाओं का चित्रण करता है, जिसमें हस्तिनापुर की स्थापना एवं पांचालों का उदय सम्मिलित है। सर्वोपरि यह हमें भागवत की देदीप्यमान शिक्षा के साथ छोड़ता है कि जो करुणा प्रत्येक प्राणी में भगवान् को देखती है, और उस प्राणी की सेवा स्वयं से पूर्व करती है, वही परम पूजा एवं भगवान् तक का सबसे सुनिश्चित मार्ग है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, एकविंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-21-dynasty-of-bharata-rantideva-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

